Impact Factor (SJIF): 5.158 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

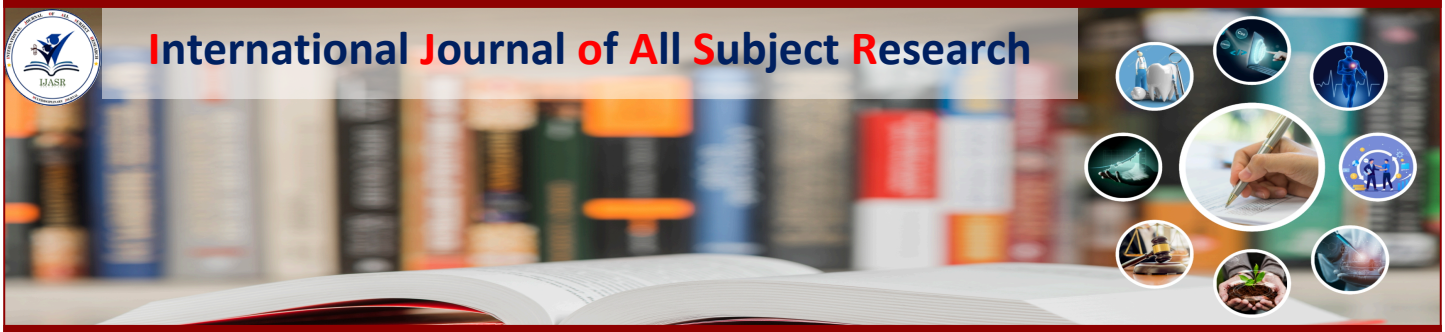

Received: 26/October/2025 **IJASR:** 2025; 4(6):64-65 **Accepted:** 09/December/2025

ज्योतिष शास्त्र में पर्यावरण चिंतन

***[1]डॉ. यज्ञ आमेटा**

*[1]सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

भारतीय ज्ञान-परंपरा में पर्यावरण की अवधारणा केवल भौतिक संसाधनों तक सीमित नहीं है, अपितु वह चेतन, नैतिक और आध्यात्मिक तत्त्वों से संयुक्त एक समग्र व्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित रही है। वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृति तथा वेदाङ्ग साहित्य में प्रकृति और मानव के सह-अस्तित्व का गहन दर्शन उपलब्ध होता है। इन्हीं वेदाङ्गों में से एक "ज्योतिष शास्त्र" न केवल कालगणना एवं खगोलीय विज्ञान का विषय है, बल्कि वह पर्यावरणीय संतुलन, ऋतुचक्र, पंचमहाभूत तथा ग्रह-नक्षत्रों के माध्यम से प्रकृति और मानव जीवन के पारस्परिक संबंधों को भी स्पष्ट करता है।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य यह प्रतिपादित करना है कि ज्योतिष शास्त्र में पर्यावरण चिंतन एक सुसंगठित, वैज्ञानिक तथा दार्शनिक दृष्टि के रूप में अंतर्निहित है। ग्रहों की गति, ऋतुओं का निर्धारण, वर्षा-अनावृष्टि, प्राकृतिक आपदाओं तथा मानव स्वास्थ्य—इन सभी विषयों को ज्योतिषीय परंपरा ने पर्यावरणीय संदर्भ में समझने का प्रयास किया है। आधुनिक युग में जब जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव-विविधता का क्षरण तथा पारिस्थितिक असंतुलन जैसी समस्याएँ विकराल रूप धारण कर चुकी हैं, तब ज्योतिषीय दृष्टि एक वैकल्पिक, सांस्कृतिक एवं संतुलित समाधान प्रस्तुत कर सकती है। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि ज्योतिष शास्त्र का पर्यावरण चिंतन आज भी प्रासंगिक और उपयोगी है।

मुख्य शब्द: ज्योतिष शास्त्र, पर्यावरण चिंतन, पंचमहाभूत, ग्रह-नक्षत्र, ऋतुचक्र, पारिस्थितिकी, भारतीय ज्ञान परंपरा, सतत विकास।

1. प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी का मानव अभूतपूर्व वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के शिखर पर खड़ा है, किंतु इसके साथ-साथ वह गंभीर पर्यावरणीय संकटों से भी जूझ रहा है। वैश्विक तापवृद्धि, जलवायु परिवर्तन, वायु-जल-भूमि प्रदूषण, वनों का विनाश तथा जैव-विविधता का तीव्र ह्रास—ये सभी समस्याएँ आधुनिक विकास मॉडल की सीमाओं को उजागर करती हैं। आधुनिक पर्यावरण विज्ञान इन समस्याओं के समाधान हेतु तकनीकी, विधिक और नीतिगत उपाय प्रस्तुत करता है, परंतु नैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि का अभाव प्रायः अनुभव किया जाता है।

भारतीय सभ्यता में पर्यावरण को कभी भी उपभोग की वस्तु मात्र नहीं माना गया। वैदिक दृष्टि में प्रकृति 'माता' है और मानव उसका उत्तरदायी पुत्र—

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"
(ऋग्वेद 12.1.12)

यह उद्घोष मनुष्य और पृथ्वी के मध्य एक नैतिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक संबंध की स्थापना करता है। इसी व्यापक दृष्टि का व्यवस्थित वैज्ञानिक रूप हमें ज्योतिष शास्त्र में प्राप्त होता है।

ज्योतिष शास्त्र को सामान्यतः भविष्यफल अथवा कुंडली-निर्माण तक सीमित कर दिया गया है, जबकि वास्तविकता यह है कि यह शास्त्र प्रकृति, काल, ग्रह, नक्षत्र, ऋतु और मानव जीवन के पारस्परिक समन्वय का एक सुव्यवस्थित विज्ञान है। इस शास्त्र में निहित पर्यावरणीय दृष्टि को समझना आज के समय की आवश्यकता है।

2. ज्योतिष शास्त्र: प्रकृति-आधारित विज्ञान

ज्योतिष शास्त्र का मूलाधार "काल (Time)" है, और भारतीय दर्शन में काल को ब्रह्म की अभिव्यक्ति माना गया है। काल की गणना सूर्य, चन्द्र, ग्रहों एवं नक्षत्रों की गति से होती है, जो पूर्णतः प्राकृतिक एवं खगोलीय घटनाएँ हैं। इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र प्रकृति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ विज्ञान है।

वेदाङ्गों में ज्योतिष के महत्व को निम्न श्लोक द्वारा प्रतिपादित किया गया है—

"यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्॥"

इस श्लोक का तात्पर्य है कि जैसे मयूर के लिए शिखा और नाग के लिए मणि अनिवार्य है, वैसे ही वेदाङ्गों के लिए ज्योतिष अनिवार्य है। कारण यह है कि यज्ञ, व्रत, कृषि, ऋतु-ज्ञान और सामाजिक जीवन—

***Corresponding Author:** डॉ. यज्ञ आमेटा

सभी का नियमन काल और प्रकृति के माध्यम से होता है।

3. पंचमहाभूत सिद्धांत और पर्यावरणीय संतुलन

भारतीय दर्शन में पंचमहाभूत—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—सृष्टि के मूल तत्त्व माने गए हैं। यह तत्त्व न केवल ब्रह्मांड की रचना करते हैं, बल्कि मानव शरीर और पर्यावरण दोनों की आधारशिला भी हैं।

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों को इन पंचमहाभूतों से संबद्ध किया गया है—

- सूर्य — अग्नि तत्त्व (ऊर्जा, ताप, प्रकाश)
- चन्द्र — जल तत्त्व (आर्द्रता, वर्षा, मानसिकता)
- मंगल — पृथ्वी तत्त्व (भूमि, खनिज, स्थायित्व)
- बुध— वायु तत्त्व (वायुमंडल, संचार)
- गुरु — आकाश तत्त्व (विस्तार, संतुलन)

इन तत्त्वों का संतुलन ही पर्यावरणीय स्वास्थ्य का आधार है। अग्नि तत्त्व की अधिकता से तापवृद्धि, जल तत्त्व की असमानता से सूखा या बाढ़, वायु तत्त्व के दूषण से वायु प्रदूषण—ये सभी आधुनिक पर्यावरणीय समस्याएँ पंचमहाभूत असंतुलन के उदाहरण हैं। ज्योतिष शास्त्र इस असंतुलन को पहचानने और सुधारने की दृष्टि प्रदान करता है।

4. ग्रह-नक्षत्र और पर्यावरणीय संकेत

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने दीर्घकालीन अवलोकन के आधार पर ग्रह-नक्षत्रों और प्राकृतिक घटनाओं के बीच संबंध स्थापित किया। वराहमिहिर की "बृहत्संहिता" इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें वर्षा, सूखा, भूकंप, ग्रहण और धूमकेतु जैसे विषयों का वैज्ञानिक विवेचन मिलता है।

"शुक्रास्ते यदि स्युः तदा वर्षा न भवति।"

यह कथन दर्शाता है कि ग्रहों की स्थिति का प्रभाव वर्षा-चक्र पर पड़ता है। इसी प्रकार राहु-केतु को वायुमंडलीय अस्थिरता, तूफान और प्राकृतिक आपदाओं से जोड़ा गया है। यह प्राचीन पर्यावरणीय पूर्वानुमान प्रणाली का उदाहरण है।

5. ऋतुचक्र, पंचांग और पारिस्थितिक अनुशासन

भारतीय पंचांग ज्योतिषीय गणनाओं पर आधारित है। वर्ष को छह ऋतुओं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर—में विभाजित किया गया है। प्रत्येक ऋतु के अनुसार आहार, व्यवहार, कृषि और उत्सव निर्धारित किए गए।

संक्रांति, व्रत, पर्व और उत्सव केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि पर्यावरण के प्रति कृतज्ञता और संतुलन के प्रतीक हैं। यह एक प्रकार का "पारिस्थितिक अनुशासन (Ecological Discipline)" है, जो मानव को प्रकृति के अनुरूप जीवन जीने की शिक्षा देता है।

6. 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' : मानव–पर्यावरण समन्वय

ज्योतिष शास्त्र का मूल सिद्धांत
"यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे"

यह प्रतिपादित करता है कि मानव शरीर और ब्रह्मांड समान तत्त्वों से निर्मित हैं। यदि पर्यावरण दूषित होगा, तो उसका प्रभाव मानव स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन पर अनिवार्य रूप से पड़ेगा। यह सिद्धांत आधुनिक समग्र पारिस्थितिकी (Holistic Ecology) से पूर्णतः साम्य रखता है।

7. आधुनिक पर्यावरणीय संकट और ज्योतिषीय दृष्टि

आधुनिक पर्यावरणीय संकट का मूल कारण प्रकृति से विच्छिन्न जीवनशैली है। ज्योतिष शास्त्र जीवन को सूर्य, चन्द्र, ऋतु और प्रकृति की लय के साथ जोड़ने की शिक्षा देता है।

सूर्योपासना ऊर्जा-संयम का प्रतीक है, चन्द्रदर्शन मानसिक संतुलन का, वृक्षारोपण पृथ्वी तत्त्व के संरक्षण का और नदी-पूजन जल-संरक्षण का सांस्कृतिक प्रतीक है। ये परंपराएँ आज के पर्यावरण संरक्षण अभियानों के सांस्कृतिक आधार बन सकती हैं।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ज्योतिष शास्त्र में पर्यावरण चिंतन एक सुव्यवस्थित, वैज्ञानिक और जीवनोपयोगी दृष्टि के रूप में विद्यमान है। ग्रह-नक्षत्र, पंचमहाभूत और ऋतुचक्र मानव और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करते हैं। आधुनिक पर्यावरणीय विमर्श यदि इस ज्योतिषीय दृष्टि को आत्मसात करे, तो सतत विकास का एक मौलिक भारतीय मॉडल विकसित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ऋग्वेद
2. अथर्ववेद
3. लगधाचार्य – वेदाङ्ग ज्योतिष
4. वराहमिहिर – बृहत्संहिता
5. सूर्यसिद्धान्त
6. गर्ग संहिता
7. नारदीय पुराण
8. काणे, पी.वी. – धर्मशास्त्र का इतिहास
9. राधाकृष्णन, एस. – भारतीय दर्शन
10. शर्मा, रामशरण – भारतीय संस्कृति का इतिहास
11. Gadgil, M. & Guha, R. – Ecology and Equity